Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 1; 2025; Page No. 82-86

Received: 21-11-2024
Accepted: 30-12-2024

स्कूल की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना उनकी निम्न और उच्च रचनात्मकता के संबंध में अध्ययन

[1]Rekha Uniyal and [2]Dr. Meenu Verma

[1]Research Scholar, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India
[2]Assistant Professor, Department of Education, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand, India

Corresponding Author: Rekha Uniyal

सारांश

परिवार में ही स्वस्थ या अस्वस्थ व्यक्तित्व की नींव रखी जाती है। यह परिवार ही है जो मनुष्य की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अधिकांश आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। एक बच्चे में न केवल शारीरिक बल्कि भावनात्मक रूप से भी सुरक्षा की भावना होनी चाहिए। उसे परिवार के सभी सदस्यों से पूर्ण स्नेह लेने में सक्षम होने की आवश्यकता है, लेकिन विभिन्न तरीकों से अपने प्यार का इजहार करने में भी सक्षम होना चाहिए। तभी वांछित होने की भावना विकसित होती है। बच्चों और माता–पिता और परिवार के अन्य सदस्यों के बीच सुखद और सामंजस्यपूर्ण संबंध सुरक्षा की भावना के विकास में योगदान करते हैं। इससे बच्चे में अपनेपन की भावना का विकास होता है। उसे परिवार की संरचना में एक स्थान और एक व्यक्ति के रूप में पहचाना जाना चाहिए और उसका सम्मान किया जाना चाहिए। बच्चे की ज़रूरतों और भावनाओं को न तो हल्के में लिया जाना चाहिए और न ही नज़रअंदाज़ किया जाना चाहिए। छात्र स्कूल और स्कूली शिक्षा से कुछ स्पष्ट और निहित अपेक्षाओं के साथ शैक्षिक संस्थान में प्रवेश करते हैं और प्रवेश के बिंदु पर कुछ विशेषताओं से संपन्न होते हैं। इस प्रकार, पारिवारिक वातावरण, व्यक्तित्व निर्माण और अन्य स्वभाव (जैसे, योग्यता, रुचि, योग्यता), एक शिक्षार्थी की संपत्ति और देनदारियां उसे विशिष्ट रूप से स्कूल या कॉलेज के साथ स्वस्थ और उत्पादक या अस्वास्थ्यकर और विनाशकारी तरीके से बातचीत करने के लिए तैयार करती हैं। तौर तरीकों। इन विशेषताओं में काफी व्यक्तिगत अंतर मौजूद हैं। शैक्षिक प्रणाली की मांगों और शिक्षार्थियों की विशेषताओं के बीच या शिक्षार्थियों की अपेक्षाओं और शैक्षिक प्रक्रिया, या दोनों के बीच असंगति के कारण स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। नौकरी के बाजार में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, माता–पिता से उपलब्धि के बढ़ते दबाव, अनिश्चित भविष्य और माता–पिता की आकांक्षाओं और उनकी संतान के माध्यम से मुआवजे की इच्छा के संदर्भ में इस तरह की असंगतियां अधिक से अधिक प्रमुख होती जा रही हैं।

मूलशब्द: शैक्षिक प्रणाली, प्रतिस्पर्धा, भावना, सामाजिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक

1. प्रस्तावना

वर्तमान में प्रत्येक माता पिता अपने बालकों को बेहतर शिक्षा देना चाहते हैं और साथ ही यह भी चाहते हैं कि उनका बालक सबसे अव्वल रहे। अतः अपने बालकों को सबसे अव्वल बनाने की चाह उनके बालकों को प्रतियोगिताओं के जाल में उलझा देती है। जो कि बालकों के लिये तनाव का कारण बनती है, और बच्चा खेल में भी आनंद नहीं बल्कि जीत तलाशता है।

आज के समय मे माता पिता के वर्किंग होने के कारण माता पिता अपने बालकों को समय नहीं दे पाते, अतः बालक अपनी परेशाानी न बता पाने के कारण धीरे धीरे मानसिक तनावों का विकार होने लगते हैं। बालकों में मानसिक तनाव के बारे में एक मनोचिकित्सक का अध्ययन बताता है कि प्रारम्भिक स्तर पर बालकों में जल्दी मानसिक बदलाव होने के कारण उनके तनाव ग्रस्त होने की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिये पहले बालकों के तनाव ग्रस्त होने के कारणों के होने का पता लगाना अत्यन्त आवश्यक है।

माता पिता की आकांक्षाओं के कारण सौ प्रतिशत अंक लाने का दबाव बच्चों से उनका बचपन ही नहीं छीनता, बल्कि बालक तनाव से अवसाद की और बढ़ने लगते हैं। आज बच्चों में तनाव का स्तर इतना बढ़ गया है कि उनके मानसिक विकास के साथ साथ उनके शारीरिक विकास में बाधा पड़ने लगी है। ऐसे में आवश्यकता है कि हम विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा के साथ साथ

उनके तनाव मुक्त बचपन पर गंभीरता से सोचें। शिक्षा मंत्रालय की ओर से जारी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि 11 से 17 वर्ष की आयु वर्ग के बालक उच्च तनाव का विकार होते जा रहे हैं। जिससे उनके मानसिक स्वास्थय पर गंभीर असर पड़ रहा है। विशेषज्ञों की राय है कि बालक अपनी मानसिक एवम् शारीरिक क्षमता के अनुसार जितना कर सकते हैं या फिर जितना अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकते हैं उससे ज्यादा की चाह बालकों की क्षमता को प्रभावित कर सकती है।

स्वास्थय विशेषज्ञों का मानना है कि बच्चों की भागदौड़ वाली जीवन शैली, पाठ्यक्रम की अधिकता उन्हें शारीरिक रूप से बीमार कर रहा है। लगातार बढ़ता मानसिक दबाव बालकों में निराशा के भाव पैदा करता हुआ प्रतीत होता है। अतः बालकों के स्वस्थ भविष्य के लिये माता पिता को यह जानना अति आवश्यक है कि उनके बालक की क्षमता क्या है ? वह क्या करना चाहता है ? उसकी रूचि किस क्षेत्र में है ? बालकों की क्षमता से ज्यादा उम्मीद करना बालक की अधिगम क्षमता को तो प्रभावित करेगा ही बल्कि साथ में चिन्तन, तनाव व अवसाद भी उसके विकास में बाधक बनकर अवरोध का कारण बन सकता ह। अतः बालक की प्रतिभा और रूचि को जानना अति आवश्यक है ताकि वे अपना बेहतर भविष्य बना सकें।

ज्यादातर नीति निर्माताओं व शिक्षाविदों की ओर से चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास व मानसिक स्वास्थय आदि को शैक्षिक उद्देश्यों के रूप में शामिल करने की बात की जाती है लेकिन विडम्बना है कि हमारे कार्यक्रमों में न तो उस सीमा तक प्रोत्साहित ही किया जाता है और न ही मूल्यांकित। वास्तव में आधुनिक शिक्षा प्रणाली मैकाले की देन है जिसमें छात्र शिक्षक संवाद पर कम बल्कि पाठ्यक्रम पर ज्यादा फोकस किया जाता है। केवल पाठ्यक्रम पर फोकस होना बालकों पर मानसिक रूप से दबाव डालता है और मानसिक दबाव का निरन्तर बढना ही अवसाद का कारण बनता है।

2. साहित्य की समीक्षा

उमादेवी (2005) ने कहा कि भावनात्मक रूप से बुद्धिमान होने का अर्थ है व्यक्तिगत कौशल रखना जो एक समृद्ध और संतुलित व्यक्तित्व की विशेषता रखते हैं। यह व्यक्तिगत भावनात्मक और सामाजिक क्षमताओं और कौशलों की एक श्रृंखला है जो पर्यावरण की मांगों और दबावों से निपटने में सफल होने की व्यक्ति की क्षमता को प्रभावित करती है। यह अध्ययन ईआई और कुछ सामाजिक कारकों से संबंधित है। 15–17 आयु वर्ग के बीच कुल 120 माता–पिता और उनके बच्चों को एक नमूने के रूप में चुना गया था। उमा देवी (2003) द्वारा विकसित भावनात्मक बुद्धिमत्ता सूची का उपयोग किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता के स्तर का अध्ययन करने के लिए एक शोध उपकरण के रूप में किया गया था। परिणामों से पता चला कि माता–पिता (माता और पिता) का पेशा, शिक्षा का स्तर ईआई के आयामों के साथ प्रासंगिक और सकारात्मक संबंध रखता है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि बच्चे से संबंधित चर में बच्चे की शिक्षा, लिंग और जन्म क्रम भावनात्मक बुद्धिमत्ता के तनाव सहनशीलता और खुशी के आयामों से महत्वपूर्ण रूप से संबंधित थे। महाराष्ट्र के ड्यूएल जिले के शहरी और ग्रामीण दोनों तरह के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से 24 से 56 वर्ष की आयु के 500 माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों का चयन किया गया। इनमें से 250 पुरुष और 250 महिलाएं थीं। अध्ययन के लिए इस्तेमाल किया गया उपकरण एक संरचित प्रश्नावली थी जिसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता परीक्षण कहा जाता है जिसे एन.के. चंदा और डॉ. दलीप सिंह द्वारा विकसित किया गया था। परिणाम दर्शाते हैं कि लगभग सभी (98.4:) शिक्षक भावनात्मक बुद्धिमत्ता की 'निम्न' श्रेणी में आते हैं। परिणामों से पता चला कि पुरुष और महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है, इसलिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता लिंग से संबंधित नहीं है।

गखर, चोपड़ा और सिंह, (2007) ने उच्च और निम्न रचनात्मकता वाले किशोरों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर एक अध्ययन किया। अध्ययन का नमूना पंजाब राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित स्कूलों से बेतरतीब ढंग से चुना गया था दूसरे शब्दों में, यद्यपि कम रचनात्मक और उच्च रचनात्मक किशोरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चर पर महत्वपूर्ण रूप से अंतर नहीं पाया गया, फिर भी उच्च रचनात्मकता वाले किशोरों में, कम रचनात्मक किशोरों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर अधिक था। पुरुष और महिला भावनात्मक बुद्धिमत्ता के चर पर महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं थे, फिर भी उच्च रचनात्मक लड़के उच्च रचनात्मक लड़कियों की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक बुद्धिमान थे। अध्ययन से यह भी पता चला है कि कम रचनात्मक लड़कियों ने कम रचनात्मक लड़कों की तुलना में थोड़ा अधिक अंक प्राप्त किए। दूसरे शब्दों में, कम रचनात्मक लड़कियां कम रचनात्मक लड़कों की तुलना में भावनात्मक रूप से थोड़ी अधिक बुद्धिमान थीं।

अरुणमोझी और राजेंद्रन (2008) ने "स्वयं सहायता समूह के सदस्यों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता" पर एक अध्ययन किया। नमूने में तमिलनाडु के कुड्डालोर जिले के चिदंबरम तालुक के छह अलग–अलग गांवों में रहने वाली 305 महिला स्वयं सहायता समूह सदस्य शामिल थीं यह देखा गया है कि एकल परिवारों से आने वाले स्वयं सहायता समूह के सदस्य संयुक्त परिवारों में रहने वाले सदस्यों की तुलना में अधिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता दिखाते हैं। परिणाम यह भी दर्शाते हैं कि विभिन्न आयु, समुदाय और पारिवारिक स्थिति समूहों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। स्वयं सहायता समूहों के सदस्य, जिनकी आयु 26 से 45 वर्ष के बीच है, अन्य आयु समूहों की तुलना में अधिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता रखते हैं। स्वयं सहायता समूह के सदस्य जो सबसे पिछड़े समुदाय से संबंधित हैं, पिछड़े समुदाय और अनुसूचित समुदायों से संबंधित अपने समकक्षों की तुलना में अधिक भावनात्मक बुद्धिमत्ता दिखाते हैं।

पांडा (2009) ने छात्र–शिक्षकों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता और व्यक्तित्व लक्षणों पर एक अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों में कहा गया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामान्य व्यवहार के बीच एक महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध था, जो दर्शाता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता की वृद्धि ने छात्र–शिक्षकों के सामान्य व्यवहार पर सकारात्मक प्रभाव डाला। यह पाया गया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता और छात्र–शिक्षकों के विक्षिप्त व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण नकारात्मक सहसंबंध मौजूद था। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और विक्षिप्त व्यवहार के बीच संबंध दर्शाता है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता की वृद्धि ने छात्र–शिक्षकों के विक्षिप्त व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डाला। भावनात्मक बुद्धिमत्ता में छात्र–शिक्षकों के सामान्य और विक्षिप्त व्यवहार के बीच महत्वपूर्ण अंतर था।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि की उनकी निम्न और उच्च रचनात्मकता के संबंध में तुलना करना।
- स्कूल की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि की तुलना उनकी निम्न और उच्च रचनात्मकता के संबंध में अध्ययन करना।

4. शोध पद्धति

वर्तमान अध्ययन अतीत से नहीं संबंधित है, न ही इस बात से संबंधित है कि कुछ चरों को बदलने से क्या होगा; इसलिए, यह ऐतिहासिक या प्रायोगिक तरीकों का उपयोग नहीं करता है। वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने वर्णनात्मक सर्वेक्षण का उपयोग किया है। यह शोध की वर्तमान स्थिति बताता है, जो इसे शैक्षिक अनुसंधान में महत्वपूर्ण मानता है। हालाँकि, इस तरह का अध्ययन स्थानीय मुद्दों को हल करने में मदद करता है और कभी–कभी अधिक मौलिक शोध का आधार बनाने के लिए डेटा प्रदान करता है।

वर्णनात्मक अध्ययन की जटिलता बहुत अलग है। कुल मिलाकर, वे स्थानीय समस्याओं का अध्ययन करने के लिए घटनाओं की आवृत्ति गणना करते हैं, बिना किसी महत्वपूर्ण शोध उद्देश्य के। दूसरे स्तर पर, वे घटनाओं के बीच महत्वपूर्ण संबंधों को खोजने की कोशिश करते हैं। एक साधारण प्रश्नावली द्वारा किसी मुद्दे के बारे में व्यक्तियों की राय के संदर्भ में जानकारी एकत्र करना इस प्रक्रिया की स्पष्ट आसानी और दिशाओं के कारण संभव है।

वर्तमान अध्ययन में दो प्रकार के चर शामिल थेः आश्रित चर और स्वतंत्र चर।

- **आश्रित चरः** स्वतंत्र चर को आरंभ, त्याग या संशोधित करने पर घटित होने वाली स्थिति या विशेषता को आश्रित चर कहा जाता था। इस अध्ययन में शैक्षणिक उपलब्धि को आश्रित चर माना गया था।
- **स्वतंत्र चरः** परिस्थितियाँ या लक्षण जिन्हें अन्वेषक ने देखा या नियंत्रित किया कि वे घटनाओं से कैसे जुड़े हैं। अध्ययन के स्वतंत्र चरों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता और पारिवारिक संबंध शामिल थे।

जनसंख्या पूरा समूह है जिससे नमूना लिया गया है। शोध में जनसंख्या शब्द को लोगों की आबादी के रूप में अधिक व्यापक अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जनसंख्या में व्यक्ति, वस्तु, गुण, व्यक्तित्व, परिवार, शहर आदि शामिल हो सकते हैं। इनमें से किसी का भी एक सुपरिभाषित समूह जनसंख्या है। संक्षित जनसंख्या उन विषयों का समूह है जिनके बारे में शोधकर्ता अनुभव से कुछ जानने की कोशिश कर रहे हैं। वर्तमान अध्ययन में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद रामनगर, अल्मोड़ा से संबद्ध निजी और सरकारी स्कूलों के सभी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थी शामिल हैं।

उस पूरे समूह से लिया गया नमूना अध्ययन का उपसमूह है। दूसरे शब्दों में, यह एक बड़े समूह का एक छोटा सा चित्रण है। पूरी आबादी को किसी भी वैज्ञानिक घटना में एकजुट करना कठिन होगा। विशेष उद्देश्यों के लिए चुनी गई पूरी जनसंख्या का एक छोटा सा हिस्सा नमूना है। वर्तमान अध्ययन में प्रत्येक व्यक्ति के अंतिम नमूने में चुने जाने की समान संभावना थी, इसलिए सरल यादृच्छिक नमूनाकरण का उपयोग किया गया था। वर्तमान अध्ययन में वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के 600 विद्यार्थीयों को विषय के रूप में शामिल किया गया था । इस अध्ययन में उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर से 16 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया था। अध्ययन में उत्तराखण्ड राज्य के दो जिले अल्मोड़ा और नैनीताल शामिल थे।

5. परिणाम एवं डेटा व्याख्या

तालिका 1: .निम्न और उच्च रचनात्मकता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम रचनात्मकता	600	54.57	7.65	19.860**
उच्च रचनात्मकता	600	74.00	5.40	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 1 से पता चलता है कि कम और उच्च रचनात्मकता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच 'ज' मान ('ज' = 19.860) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को अस्वीकार कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च रचनात्मकता वाले छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि कम रचनात्मकता वाले छात्रों की तुलना में बेहतर है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च रचनात्मकता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत स्कोर यानी 74.00, कम रचनात्मकता वाले वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के औसत स्कोर यानी 54.57 से अधिक है। औसत अंकों के बीच का अंतर उन लोगों की उच्च स्तर की सावधानी, सतर्कता और एकाग्रता की शक्ति के कारण हो सकता है, जिनकी शैक्षणिक उपलब्धि बेहतर है। वे अपनी सामग्री को एक महत्वपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने में सक्षम हैं, इसलिए वे कम रचनात्मकता वाले छात्रों की तुलना में अधिक अंक प्राप्त करने में सक्षम हैं। वे अपनी रचनात्मकता के स्तर के कारण अपनी शैक्षणिक समस्याओं को हल करने में सक्षम हैं।

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अंतर की तुलना करने के उद्देश्य से उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैंः

पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

कम और उच्च रचनात्मकता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत और 'टी' स्कोर तालिका 2 में दिया गया है।

तालिका 2: कम और उच्च रचनात्मकता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम रचनात्मकता	150	51.07	5.72	21.713**
उच्च रचनात्मकता	150	73.00	6.47	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 2 से पता चलता है कि कम और उच्च रचनात्मकता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच 'टी' मान ('टी' = 21.713) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को खारिज कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च रचनात्मकता वाले पुरुष छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि कम रचनात्मकता वाले पुरुष छात्रों की तुलना में बेहतर है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च रचनात्मकता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत स्कोर यानी 73.00 कम रचनात्मकता वाले पुरुष वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के औसत स्कोर यानी 51.07 से अधिक है। इससे पता चलता है कि छात्रों को अपनी छिपी प्रतिभा दिखाने और अपने विचारों को उचित तरीके से उपयोग करने के लिए बहुत अधिक अवसर प्रदान किए जाते हैं। वे अपने समकक्षों की तुलना में अधिक अनुकूलनशील होते हैं। वे किसी समस्या का तार्किक समाधान प्रदान कर सकते हैं। अपनी रचनात्मक क्षमताओं के कारण वे कम स्तर की रचनात्मकता वाले छात्रों की तुलना में शिक्षाविदों में बेहतर प्रदर्शन करते हैं।

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में अंतर की तुलना करने के उद्देश्य से निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं:

महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

कम और उच्च रचनात्मकता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का औसत और 'टी' स्कोर तालिका 3 में दिया गया है।

तालिका 3: कम और उच्च रचनात्मकता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम रचनात्मकता	150	50.60	5.55	20.022**
उच्च रचनात्मकता	150	70.06	8.13	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 3 से पता चलता है कि कम और उच्च रचनात्मकता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के बीच 'टी' मान ('टी' = 20.022) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "उच्च और निम्न रचनात्मकता के संबंध में महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को अस्वीकार कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च रचनात्मकता वाली छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि कम रचनात्मकता वाली छात्राओं की तुलना में बेहतर है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च रचनात्मकता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं का औसत स्कोर यानी 70.06 कम रचनात्मकता वाली महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के औसत स्कोर यानी 50.60 से अधिक है। इससे पता चलता है कि जिन छात्राओं में रचनात्मकता का उच्च स्तर है, उनकी याददाश्त और ज्ञान की पृष्ठभूमि अच्छी है। वे जीवन के हर क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए अपनी क्षमताओं का उपयोग करने में सक्षम हैं। वे कम रचनात्मकता वाली छात्राओं की तुलना में अपने विचारों को अधिक बार व्यक्त कर सकती हैं।

शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में

शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच अंतर की तुलना करने के उद्देश्य से उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाएँ तैयार की गई हैं:

शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में उनकी कम और उच्च रचनात्मकता के संबंध में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

कम और उच्च रचनात्मकता वाले शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत और 'टी' स्कोर तालिका 4 में दिया गया है।

तालिका 4: कम और उच्च रचनात्मकता वाले शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षणिक उपलब्धि स्कोर के लिए 'टी' मान

ग्रुप	एन	औसत	एस.डी.	'टी' मान
कम रचनात्मकता	150	49.10	5.76	19.560**
उच्च रचनात्मकता	150	69.15	8.71	

''0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक।

तालिका 4 से पता चलता है कि कम और उच्च रचनात्मकता वाले शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच 'टी' मान ('टी' = 19.560) 0.01 स्तर पर महत्वपूर्ण है। इसलिए, पहले तैयार की गई शून्य परिकल्पना, "उच्च और निम्न रचनात्मकता के संबंध में शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है" को खारिज कर दिया जाता है। इससे पता चलता है कि उच्च रचनात्मकता वाले शहरी छात्रों की कम रचनात्मकता वाले शहरी छात्रों की तुलना में बेहतर शैक्षणिक उपलब्धि है। माध्य के संदर्भ में, यह देखा जा सकता है कि उच्च रचनात्मकता वाले शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का औसत स्कोर यानी 69.15 कम रचनात्मकता वाले शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के औसत स्कोर यानी 49.10 से अधिक है। इससे पता चलता है कि जिन छात्रों में उच्च रचनात्मकता है, वे शैक्षणिक, सामाजिक, शारीरिक और जीवन के किसी भी अन्य पहलू से संबंधित किसी भी समस्या को हल करने का एक अलग तरीका खोजने में सक्षम हैं। वे स्वतंत्र विचारक हैं और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता रखते हैं। ये गुण उन्हें कम रचनात्मकता वाले छात्रों की तुलना में अपने शैक्षणिक प्रदर्शन में बेहतर प्रदर्शन करने में मदद करते हैं।

6. निष्कर्ष

ज्ञान के विस्फोट, व्यवसायों की बहुलता और विशेषज्ञता, वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के कारण, आजकल शिक्षा की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली को दक्षता और संस्कृतिकरण की प्रक्रिया की ओर उन्मुख करने की मांग बढ़ती जा रही है। विद्यालय और शिक्षक प्रणाली में वांछित परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण एजेंट हैं। अरस्तू ने घोषित किया कि शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित से उतना ही श्रेष्ठ है जितना कि जीवित व्यक्ति मृत व्यक्ति से। इसीलिए मनोवैज्ञानिक और शिक्षाविद मानव ज्ञान और विकास को बढ़ाने के लिए नए प्रयोग

करते हैं। शिक्षा के औपचारिक क्षेत्र में हम आमतौर पर बच्चे द्वारा प्राप्त शिक्षा के स्तर को उसकी शैक्षणिक उपलब्धि के माध्यम से मापते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि स्कूलों में या किसी विषय में पढ़ाए जाने वाले अवधारणाओं की समझ से संबंधित है, जिसका मूल्यांकन परीक्षा के अंकों से किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के कौशल की स्थिति या स्तर, सीखने या व्यवहार के निर्दिष्ट क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा और गहराई है। शैक्षणिक उपलब्धि शैक्षणिक उपलब्धि शैक्षिक प्रक्रिया का परिणाम है। यह शिक्षा की प्रक्रिया में छात्रों, शिक्षकों और एक संस्थान के प्रदर्शन को इंगित करता है। विद्यालय विद्यार्थियों के जीवन में विभिन्न प्रकार की उपलब्धियों में योगदान देता है, जैसे सामाजिक, भावनात्मक और शारीरिक पहलू। यह शिक्षकों और अभिभावकों दोनों की चिंता का विषय है कि कुछ बच्चे स्कूल में सफल क्यों होते हैं और अन्य असफल क्यों होते हैं। उच्च स्तर पर उपलब्धि प्राप्त करने के लिए बच्चों की संख्या बढ़ाने के लिए उपाय करना बहुत आवश्यक है। किसी भी शैक्षिक प्रणाली की प्रभावशीलता छात्रों की उपलब्धि से मापी जाती है, चाहे वह संज्ञानात्मक, भावात्मक या मनो–प्रेरक क्षेत्र हो। सामान्य शब्दों में यह एक शैक्षिक कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता को संदर्भित करता है। यह पता लगाने के लिए शोध किया गया है कि कौन से चर या अवरोधक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं। यह संकेत दिया गया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता, प्रेरणा, रचनात्मकता, शिक्षार्थियों की रुचियां और पारिवारिक वातावरण जैसे कई चर शैक्षणिक उपलब्धि के कुछ प्रभाव हैं। किसी भी विषय में शिक्षार्थी की संज्ञानात्मक संरचना में होने वाला कोई भी सकारात्मक परिवर्तन उपलब्धि का गठन करता है। यह जीवन में पदोन्नति और मान्यता का आधार है। इसके आसपास के मुद्दों की जांच करना और इस वांछित उपलब्धि को प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका प्रदान करना आवश्यक है।

7. सन्दर्भ

1. जेनर, जी. (एड.)। भावनात्मक बुद्धिमत्ता को मापना: सामान्य आधार और विवाद। हाउपेज, न्यूयॉर्क: नोवा साइंस पब्लिशर्स।, 2004.
2. गेट्ज़ेल्स जे. डब्ल्यू. जे. विले पी. डब्ल्यू. रचनात्मकता और बुद्धिमत्ता। न्यूयॉर्क: ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।, 1962.
3. गोलमैन, डी. भावनात्मक बुद्धिमत्ता के साथ काम करना। यूनिलहेचम्बा मानव संसाधन प्रबंधन पाठ्यक्रम के लिए पुस्तक समीक्षा। बैंटन बुक्स।, 1998.
4. गोलमैन डी. भावनात्मक बुद्धिमत्ता: प्रतिमान निर्माण में मुद्दे। सी. चेर्निस और डी. गोलमैन (एड्स.) में। भावनात्मक बुद्धिमत्ता कार्यस्थल। सैन फ्रांसिस्को: जोसी–बास।, 2001.
5. गोलमैन डी. भावनात्मक बुद्धिमत्ता: यह प्फ से अधिक क्यों मायने रखती है। न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स।, 1995.
6. गुड सी. वी. शिक्षा का शब्दकोश। न्यूयॉर्क: मैकग्रॉ हिल बुक कंपनी इंस।, 1973.
7. ग्रिफ़िथ जे. माता–पिता की भागीदारी, सशक्तिकरण और स्कूल के गुणों का छात्र की शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध। जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल रिसर्च.1996;91(1):33–41
8. गिलफ़ोर्ड जे. पी. रचनात्मकता। अमेरिकी मनोवैज्ञानिक. 1950;5:444–454.
9. गिलफ़ोर्ड जे. पी. मानव बुद्धिमत्ता की प्रकृति। न्यूयॉर्क: छल मैकग्रॉ–हिल।, 1967.
10. गिलफ़ोर्ड, जे. पी. मनोविज्ञान और शिक्षा में मौलिक सांख्यिकी। टोक्यो, मैकग्रॉ हिल कंपनी लिमिटेड, 1978.
11. गिलफोर्ड जे. पी. रचनात्मकता में रचनात्मकता के लक्षण और इसकी खेती, न्यूयॉर्क: हार्पर और रो।, 1983.
12. गुप्ता एन. के. काम पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता – एक पेशेवर गाइड (तीसरा संस्करण) खंड एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित।, 2006.
13. हेंडरसन ए, बिरला एन. साक्ष्य की एक नई पीढ़ी। परिवार छात्र की उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण है। वाशिंगटन, डी.सी. कानून और शिक्षा का केंद्र।, 1994.
14. हेनेसी बी. ए. और अमाबिल टी. ए. रचनात्मकता। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा. 2010;61:569–598
15. हुसियन, शमशाद. मानव व्यवहार को समझना – मनो–सामाजिक जांच। आगरा: प्रिंट पैलेस।, 1998.
16. जैगर ए. जे. और ईगन एम. के. भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मूल्य की खोज: शैक्षणिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने का एक साधन। NASPA जर्नल. 2007;44(3):512–537।
17. जेनाबदिल एच, शाहिदी आर, एल्हमीफर ए. और खादेरी, एच. दूसरी अवधि के हाई स्कूल के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता के संबंध की जांच करें। वर्ल्ड जर्नल ऑफ न्यूरोसाइंस. 2015;5:275–281।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.